Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 5.647, Volume 10, No. 04, October, 2020, pp. 73-79

कहानी के विविध आंदोलन एवं संवेदना

डॉ. श्रीराम बड़कोदिया*

शोध सारांश

स्वतंत्रता के बाद देश में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक द्वन्द्वात्मक स्थितियाँ उभरकर आई। मूल्यों के विघटन, मूल्य संक्रमण, जीवन की विसंगतियों के कारण उत्पन्न संग्राम औरत नख आदि ने नवीन कश्य दिए और उसकी सृजनात्मकता के क्षितिज विस्तृत हुए। आधुनिकीकरण प्रौद्योगिकी और पूंजीवादी व्यवस्था की क्रूरताओं के कारण मानवीय संवेदना का ह्रास होता चला गया। सामाजिक रिश्तों में बदलाव आया। वैयक्तिक आकांक्षाओं, इच्छाओं और अभिलाषाओं का हनन हुआ। जीवन के शाश्वत मूल्यों का विनाश, टूटते हुए संयुक्त परिवारों का संत्रास और केवल धन अर्जन करने की लालसा ने मनुष्य को मनुष्यता से वंचित कर दिया अमानवीयकरण की स्थिति उत्पन्न हुई। कुंठा, निराशा और अनास्था के इस परिप्रेक्ष्य में नारी का कार्य क्षेत्र बदल जाने के कारण एक वाईनारी मानसिकता का जन्म हुआ। स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में तनाव, नारी शोषण, सम्बन्धहीनता और टकराव की स्थितियों को अनेक महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में चित्रित किया। कहीं–कहीं यथार्थ के नाम पर स्त्री–पुरूष और विवाहेत्तर सम्बन्ध तथा सेक्स बहुत स्थितियों के चित्रण नारी को निरी योग्यता तथा संवेदना के अभाव में असहाय जीवन के पराजय बोध की कहानियाँ मात्र बनकर रह गई।

---

i:Lrkouk

स्वातंत्रतोत्तर युग की हिन्दी कहानी में चरित्र, शिल्प और स्थितियों सभी दृष्टियों से निखार आया है। कथ्य और शिल्प दोनों में अधिक परिष्कार, जीवन बोध और परिवेश चेतना दृष्टिगोचर होती है। इस दौर में कथ्य की विविधता, विषय सापेक्षता और उद्देश्य निरूपण की सामर्थ्य और यथार्थवादी तथा आधुनिकतावादी दृष्टि से सम्पन्न अनेक महत्वपूर्ण कथाकार उभरकर आए, जिन्होंने मानवीय संदर्भों की संवेदना के धरातल पर फार्म और कश्य दोनों के अनुरूप अपनी रचना धर्मिता को सामयिक परिवेश में जोड़ा। इससे हिन्दी कहानी अधिक विश्वसनीय बनती चली गई।

स्वतंत्रता के बाद देश में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक द्वन्द्वात्मक स्थितियाँ उभर कर आई। मूल्यों के विघटन, मूल्य संक्रमण, जीवन की विसंगतियों के कारण उत्पन्न संग्राम और तनख आदि ने नवीन कश्य दिए और उसकी सृजनात्मकता के क्षितिज विस्तृत हुए। आधुनिकीकरण प्रौद्योगिकी और पूंजीवादी व्यवस्था की क्रूरताओं के कारण मानवीय संवेदना का ह्रास होता चला गया। सामाजिक रिश्तों में बदलाव आया। वैयक्तिक आकांक्षाओं, इच्छाओं और अभिलाषाओं का हनन हुआ। जीवन के शाश्वत मूल्यों का विनाश, टूटते हुए संयुक्त परिवारों का संत्रास और केवल धन अर्जन करने की लालसा ने मनुष्य को मनुष्यता से वंचित कर दिया अमानवीयकरण की स्थिति उत्पन्न हुई। कुंठा, निराशा और अनास्था के इस परिप्रेक्ष्य में नारी का कार्य क्षेत्र बदल जाने के कारण एक वाई नारी मानसिकता का जन्म हुआ। स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में तनाव, नारी शोषण, सम्बन्धहीनता और टकराव की स्थितियों को अनेक महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में चित्रित किया। कहीं–कहीं यथार्थ के नाम पर स्त्री–पुरूष और विवाहेत्तर सम्बन्ध तथा सेक्स बहुत स्थितियों के चित्रण नारी को निरी योग्यता तथा संवेदना के अभाव में असहाय जीवन के पराजय बोध की कहानियां मात्र बनकर रह गई।

---

* सह–आचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभरलेक, जयपुर, राजस्थान।

राजनीतिक विचारधारा विशेष के कथ्य में ज्यों का त्यों रखने से शुष्कता आ गई। अधिकांश कहानियां शहरी जीवन को लेकर लिखी गई और ग्रामीण समाज तथा ग्राम्य जीवन के मनोविज्ञान की प्रायः उपेक्षा की गई।

स्वातंत्रयोतर कहानी में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी आदि कहानीकारों ने परम्परा के विरूद्ध विद्रोह किया तथा कहानी के विकास में आए अवरोध को तोड़ा।[1]

स्वातंत्रयोत्तर काल में बदलती हुई संवेदना के आधार पर विषय वस्तु मूल्य चरित्र, कथानक, रूपबद्ध भाषा आदि सभी क्षेत्रों में कहानीकारों में नये नये प्रयोग किए।[2]

डॉ. मेरू लाल गर्ग का मानना है कि स्वातंत्रोत्तर शब्द में समूचे कथा साहित्य को समेटना उचित नहीं है क्योंकि कहानी जगत में विविध आन्दोलन आए।[3]

डॉ. रजनीश कुमार के अनुसार कहानी के विकास क्षितिज पर अनेक आन्दोलनों का उदय हुआ जिनमें प्रमुख आन्दोलन इस प्रकार है–

प्रथम उन्मेष	1.	नयी कहानी
द्वितीय उन्मेष	2.	आकहानी
	3.	संचेतन कहानी
	4.	सहज कहानी
तृतीय उन्मेष	6.	समानान्तर कहानी
चतुर्थ उन्मेष	7.	जनकदी कहानी
	8.	सक्रिय कहानी[4]

dFkk vkUnksyu

स्वातंत्रोत्तर कथा आन्दोलनों में दो दिशाओं में प्रयोग किए। (1) प्राचीन से अलग करना (2) नई जमीन तोड़ना। नयी कहानी आन्दोलनों के साथ–साथ आज की कहानी, समकालीन कहानी, समसामयिक कहानी, जैसे नामों की भी चर्चा हुई, किन्तु इनमें से कोई भी नाम आन्दोलन का रूप धाराण न कर सका। साढोत्तरी कहानी की अहम् कहानी का ही दूसरा नाम था। वेदराही के अनुसार आन्दोलन अपने युग की अकुलाहट के परिचायक थे।[5] भैरव प्रसाद गुप्त के शब्दों में आन्दोलन जरूरी है। आन्दोलन के बिना कोई विद्या विकसित नहीं होती।[6] डॉ. प्रभाकर माचवे की दृष्टि में आन्दोलन जीवन्तता का लक्षण है।

स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी के क्षितिज पर नयी कहानी आन्दोलन अपनी सम्पूर्ण सम्भावनाओं के साथ उभरा जिसकी जड़े प्रेमचन्द की परम्परा में तथा जीवन के यथार्थ में थी। नयी कहानी ने मुख्यतः मध्यवर्गीय जीवन के दायरे में आजादी के बाद में मूल्य संकट और मूल्य विघटन को पढ़ा। नयी कहानी ने बदलते जीवन मूल्यों तथा उनके संक्रमण को व्यापकता के साथ चित्रित किया।

ubZ dgkuh vkSj laosnuk

नयी कहानी से हिन्दी कहानी में आन्दोलन धर्मिता की शुरूआत होती है। यह पहला आन्दोलन था। जिसने अपने समय के अधिकतर रचनाकारों को प्रभावित किया। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय जीवन के सभी परिवर्तन बदलते मूल्य, तमाम अन्तर्विरोध नयी कहानी में बराबर अभिव्यक्त हुए है।[7] नयी कहानी के पीछे नयेपन का संचेत आग्रह था, जो परिवेश और रचनाशीलता के द्वन्द्व की उपज था। जिसने परिवेश के कथाकारों को, जीवन के बदलते यथार्थ को, नयी दृष्टि से देखने और उसकी अभिव्यक्ति की नयी भंगिमाओं को तलाशने के लिए प्रेरित किया।

नयी कहानी की चर्चा 55–56 में हुई। डॉ. नामवर सिंह ने कहानी के वार्षिकाक में दुष्यन्त कुमार ने कल्पना में नयी कहानी की बात उठाई।[8]

राजेन्द्र यादव के शब्दों में ''देश विभाजन के समय हुए जनसंख्या के स्थानान्तरण, नरसंहार से नैतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हमारे नैतिक व सामाजिक मूल्यों का तीव्र गति से विघटन हुआ। विभाजन की अग्नि में राष्ट्रीय आस्था, आदर्श, विश्वास झुलस गए, विघटनकारी, प्रवृतियों का उन्मेष हुआ। पाकिस्तान में अगर ईट चूने के मकान, जमीनों का ध्वंस हुआ तो भारत में सारी मर्यादाओं, नैतिक मान्यताओं, अच्छे बुरे की बड़ी इमारते गिरने लगी।[9] औद्योगिक क्रांति तथा अणुयुग की दुर्दशनीय परिस्थितियों ने प्राचीन संस्कृति और आधुनिकता के प्रतिद्वन्द्व ने हमारी भावनाओं, चिन्तन और आचरण में एक संक्राति उपस्थित कर दी।[10] शहरीकरण महानगरीकरण की तीव्र प्रतिक्रिया, व्यस्त जिन्दगी, सांस्कृतिक जीवन में अपरिचय, भय, अकेलापन, संत्रास, कुंठा, जैसे भावों को लेकर संवेदनाओं कि रंग बदलने लगे। पूंजीपतियों के अनैतिक हथकड़े उभरे गए। श्रमिक वर्ग ने बहुत कुछ नया देखा योगा और झेला। जीवन में निराशा, विषमता की कड़वाहट संवेदना के सूत्र बुनने लगी।

डॉ. भगवानदास वर्मा के शब्दों में ''परम्परावादी जीवन की असारता, भारतीय संस्कृति की नये युग के संदर्भ में निरर्थकता, स्वतंत्रता प्राप्ति और भ्रमसंग की अवस्था, जीवनादर्शों की अनिश्चितता, व्यक्ति जीवन में अकेलेपन और अजनबीपन का अहसास आदि अनुभूत सत्यों के अनेक स्तरीय संदर्भों के परिणाम पर नयी कहानी विकसित हो रही है।[11] नयी कहानी में संवेदना का कैनवास बहुत व्यापक है। गांव, कस्बा, नगर, महानगर के अनुभवों की ईमानदारी से प्रस्तुत किया गया है। ग्राम्य बोध से जुड़ी संवेदनाएं तीसरी कसम उर्फ मोर गए गुलफाम सामूहिक रूप से अनुभूति के स्तर पर बदलते हुए सामाजिक जीवन की पहचान की कहानी को नयी कहानी कहते है।[12]

नयी कहानी में संवेदना का कैनवास बहुत व्यापक है। गांव, कस्बा, नगर–महानगर के अनुभवों को ईमानदारी से प्रस्तुत किया गया है। ग्राम्य बोध से जुड़ी संवेदनाएँ तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम (रेणु) लालपान की बेगम (रेणु) कोसी का घटवार (शेखर जोशी) कर्मनाथ की हार (शिव प्रसाद सिंह) मेरा गांव कहां? (डॉ हेतु भारद्वाज) में तथा नगर महानगरीय जीवन खोयी हुई दिशाएं (कमलेश्वर), ग्लास टैंक (मोहन राकेश), मजाक (राजेन्द्र यादव), दिल्ली में एक मौत (कमलेश्वर), अभिव्यक्ता होता है। मानवीय विसंगतियों से जुड़ी संवेदनाएं मांस का दरिया, जुगनू, आदर्श की मां, यही सच है, परिन्द्रे, राजा निरबंसियां ठहरा हुआ, चाकू जैसी कहानियों में मिलती है।

उच्च वर्ग को लेकर एक और जिन्दगी (मोहन राकेश) वापसी (उषा प्रियवदा) दोपहर का भोजन (अमरकान्त) सेव और देव (अज्ञेय) में तथा उच्च मध्यम निम्न वर्ग के मूल्य संक्रमण दीवारे ही दीवारे (भीमसेन त्यागी) जिन्दगी और गुलाब के फूल (उषा प्रियवंदा) में उभरे गए है। चीफ की दावत (भीष्म साहनी) में संवेदना मां के साथ जुड़ती है तो जिन्दगी और जोक (अमरकान्त) में अभिशाप्त जीवन यापन करते रजुमा के साथ। परम्परागत मूल्यों का खंडन तलाश, दाम्पत्य, (राजकमल चौधरी) ऊंचाई (मन्नू भण्डारी) में मिलता है। धूप के टुकड़े (विवाह पूर्व यौन सम्बन्धों की कथा है।) नैतिकता द्वारा नये यथार्थवादी मूल्यों की खोज का संकेत है। नयी कहानी पर नैतिकता के विरोध के नाम पर सैक्स का चित्रण, होमोसेक्सुअल, लेस्विचन आदि यौन विकृतियों को कलात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का अश्लील कहने का आरोप लगाया जा तो सकता है, लेकिन यह आरोप लगाकर नयी कहानी की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

vdgkuh vkj lonuk

1960 के बाद सचेतन कहानी का आन्दोलन स्थापित भी नहीं हो पाया था कि अकहानी आन्दोलन चर्चित हो गया। नयी कहानी से अलगाने के उद्देश्य से इस आन्दोलन का सूत्रपात किया गया। डॉ. गंगाप्रसाद विमल के शब्दों में अकहानी कथा के स्वीकृत आधारों का विशेष तथा किसी भी तरह के मूल्य स्थापना का अस्वीकार है।[13] यह कहानी सभी वर्गीकरणों, मूल्याकंन के आधारों और पूर्व समीक्षाओं को अस्वीकार करती है।[14] अकहानी में निम्नांकित भावों का चित्रण मिलता है। (1) संघर्ष (2) आत्मपीड़न (3) ऊब (4) अकेलापन (5) अजनबीपन (6) विसंगति

डॉ. चन्द्रभान रावत अकहानी दर्शन का त्रि–सूत्र इस प्रकार बताते है–

- जीवन से समपृक्तता
- लेखक की स्वतंत्रता
- विद्रोही भावना।[15]

vdgkuh e

- शिल्प का विरोध तो है परन्तु शिल्प के प्रति उदासीनता का भख है, यह एक शिल्पहीन आन्दोलन है।
- पात्र प्रतीक रूप में स्थिति का संकेत देते है। कई जगह पात्रों के नाम भी नहीं होते – क, ख, ग ...
- इसमें कैंटेसी, मोनो, लीग, संस्मरण, आत्म प्रलाप, डायरी आदि विधाओं का साथ मिलता है।
- समसरता, नाटकीयता, आकस्मिकता का प्रभाव झलकता है।[16]

अकहानी अपनी सीमाओं के कारण अपनी पहचान बनाने की प्रक्रिया में ही स्थगित होने के पहले ही चूं–चूं का मुरब्बा बनकर रह गई। इसके ध्वन वाहक कहानीकार, जो अनचाहे अधूरे मन से आए थे, स्थितियों की वास्तविकता समझकर अलग हो गए।

इससे रचनात्मक प्रवृतियों के स्थान पर गुटबंदी ज्यादा थी। पुरानी मूल्य व्यवस्था के प्रति नफरत और गुस्से का भाव ही अभिव्यक्त हुआ। पुरानी पीढ़ी बूढे माँ–बाप के प्रति काफी आक्रोश था। रक्तपात (दूधनाथ सिंह), सुखांत (दूधनाथ सिंह), रात (कृष्ण बलदेव वेद), मुक्ति (विजय मोहन) कहानियों में मां–वात्सल्य व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति नहीं रहकर नफरत की दुनिया सिरजती है। ज्ञान रंजन की पिता, गंगा प्रसाद विमल की शीर्षकहीन, रमेश बक्षी की पिता दर पिता में पिता और बेटे के पुराने सम्बन्ध टूटते है।

lpsru dgkuh vkj lonuk

आधार के सचेतन कहानी विशेषांक में पहली बार सचेतन कहानी आन्दोलन का सूत्रपात महीप सिंह ने किया। उन्होंने बताया ''सचेतन एक दृष्टि है जिसमें जीवन जिया भी जाता है तथा जाना भी जाता है। मनुष्य की प्रवृति जीवन से भागने की नहीं रही है। जीवन की ओर भागना उसका नियति है।''[17]

1961 में प्रस्तावित इस कहानी आन्दोलन को डॉ. महिप सिंह ने आधुनिकता की दृष्टि प्रदान की। उन्होंने आधुनिकता को एक गतिशील स्थिति माना है।[18]

डॉ. गोरधन सिंह शेखावत के अनुसार ''शिल्प के प्रति जागरूकता न होने के कारण आज लिखी जाने वाली कहानियों में संचेतन कहानियों को पहचानना बड़ा मुश्किल है क्योंकि स्वस्थ, जागरूक सक्रिय और आस्थावान दृष्टि तो बहुतसी नयी कहानियों में भी है।[19]

सचेतन कहानी अश्लील कहानियों का सामूहिक स्वर में प्रतिवाद करती है। प्रतिनिधि सचेतन कहानियों में कील (महीप सिंह) में योग्य वर न मिल जाने की विवशता, लौ पर रखी हथेली (रामकुमार भ्रमर), लिपस्टिक (आनन्द प्रकाश जैन) में सामाजिक विसंगतियों का अनाबृद्ध रूप, जड़ता (कुलदीप बग्गा) में एक अविवाहित व्यक्ति का द्वन्द्व उभारा गया है। बीस सुबहों के बाद (मनहर चौहान) धुंधले चेहरे (महीप सिंह) बर्फ। सुरेन्द्र अरोड़ा में महानगरीय जीवन में पिता पुत्र, माँ–बेटे, मित्र–रिश्तेदार के सम्बन्ध में होने वाले परिवर्तन को बहुत ही निस्संगता के साथ उभारा गया है।

lekukUrj dgkuh vkj lonuk

सातवें दशक के अंत होते–होते यह महसूस किया जाने लगा कि देश का एक बहुत बड़ा वर्ग कहानियों से उपेक्षित हो गया है। यह वर्ग आम आदमी के नाम से पुकारा गया और इसे ही समांतर कहानी आन्दोलन के केन्द्र में रखकर कहानियों का सृजन प्रारम्भ हुआ। समांतर कहानी में आम आदमी शब्द का प्रयोग सर्वहारा शब्द के विरोध में हुआ। आम आदमी शब्द सर्वहारा की धारणा का विस्तार करता है क्योकि आम आदमी

की जिन्दगी गांवों से लेकर बाजारों, कस्बो, नगरों, और महानगरों तक फैली है। आम आदमी में मजदूर, निम्न वर्गीय किसान, खेतीहर मजदूर, कम वेतन पाने वाले शिक्षक, किरानी, चपरासी और अन्य शोषित पीड़ित लोगों का संसार शामिल है।

तमाम घोषणाओं के बावजूद इस देश की व्यवस्था में आम आदमी की आर्थिक स्थिति पर ध्यान नहीं दिया गया। सुविधा भोगी वर्ग द्वारा सुविधाओं पर कब्जा होता गया और नेताओं ने अपने भाषणों में किसान मजदूरों के महत्व को छला है। अतः समांतर कथाकारों ने इस आम आदमी के आर्थिक अभाव, संघर्ष और समस्याओं को पहचाना। इनकी दृष्टि समाजवादी थी। इसी समाजवादी चेतना ने आम आदमी अर्थात् निम्न प्रथम वर्ग व निम्न वर्ग को साहित्य के केन्द्र में लाने की प्रेरणा दी।

समान्तर (1972) के प्रकाशन से समांतर कथा चेतना का प्रारम्भ माना जा सकता है। बाद में सारिका के अक्टूबर 1974 के अंक से कमलेश्वर के संपादन में समानान्तर कहानी विशेषांक का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। कमलेश्वर में 'मेरा पन्ना' स्तम्भ के अन्तर्गत सारिका पत्रिका में समान्तर कहानी का संकेत किया। ललित मोहन अवस्थी व कामला नाथ के संपादन में समांतर साहित्य (त्रैमासिक) का अक्टूबर दिसम्बर 1974 का अंक निकला।

lekUrj dgkuh d: nk i{k gA

- समान्तर कहानी उन सारी शक्तियों के उन्मूलन का स्वरघोष करती है जिसके कारण आज के समाज में ऐसा दमघाट वातावरण है जो अभिशप्त है।
- वह आम आदमी के संघर्ष की अभिव्यक्ति करते हुए उन सारे कमजोर स्थलों को बेरहमी से चीर रही है जिसके कारण आम आदमी के संघर्ष की पकड़ दुर्लभ हो रही है। आम आदमी संघर्षरत है, उसकी जिजीविषा उसे लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है, इसलिए आम आदमी निरन्तर लड़ रहा है।

vke vkneh dh yMkbZ

- उस व्यवस्था के खिलाफ है जिसमें 1. सामन्तवादी 2. पूंजीवादी 3. धार्मिक शक्तियों की साजिश शामिल है।
- कहानीकार उन शक्तियों के खिलाफ लड़ाई करने हेतु अंगुली उठाता है?
- उनके खिलाफ कैसी लड़ाई होनी चाहिए थी, यह कहानीकार तय करता है।

इस प्रकार शोषण प्रधान व्यवस्था के खिलाफ आम आदमी की तस्वीर गुस्से में आदमी (जवाहर सिंह) जलते हुए डैने (हिमांशु जोशी), आदमी (आशीष सिन्हा), आन्दोलन (कान्हवी सिंह तोमर) कहानियाँ शामिल है।

आम आदमी की विवशता की तस्वीर अन्न हीन (सुदीप) तीसरी दुनिया (प्रकाश बाथम) तमाशा (स्वदेश दीपक), पराई प्यास का सफर (आलम शाह खान) आदि कहानियों में है। अत्याचार, शोषण के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाले जुझारू चरित्रों की कहानियाँ, अंधे कुए का रास्ता (अरूण मिश्र) चौथा आश्चर्य (जवाहर सिंह), सुरंग की पहली सुबह (बसंत कुमार) है। डॉ. विनय के शब्दों में समांतर कथा आन्दोलन नई सामाजिकता की चेतना को व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है।[20] 1962 में चीनी आक्रमण के पश्चात् बढ़ी बेरोजगारी, महंगाई की बदली मानसिकता को लेकर हिन्दी कहानी में नई दिशा उपजी। अनुभूति की एकता और समानता को आठवें दशक में स्वीकार करते हुए कहानी की भूमिका कमलेश्वर ने लिखी और वे ही समान्तर कहानी के प्रस्तावक भी बने।

lgt dgkuh vkSj laosnuk

श्री अमृत राज सहज कहानी के प्रस्तोता है जिन्होंने नयी कहानी में कहानी की सहजता को खोजा। वह लिखते है "जिस कहानी में सहज कथारस नहीं है वह किसी दिन लोकप्रिय नहीं हो सकती न ही साहित्य में स्थायी प्रतिष्ठा ही पा सकती है क्योंकि आदमी हर चीज से विद्रोह कर सकता है, हर चीज को छोड़ सकता है, अपने आन्तरिक स्वभाव को नहीं।[21]

उन्होंने सहज कहानी की प्रस्तावना की। उनकी चिन्ता थी कि कहानीकार सहज होकर क्यों नहीं लिखते। सारे आडम्बरों को त्याग कर सहज होकर लिखे।

Mk- onidk'k vfHkrkHk dk vuqlkj

- सहज कहानी व्यवस्था और परिवेश के प्रति विरोध और क्षेम की कहानी है।
- यह नाम हीनो, रूपहीन, आक्रोश और क्षोम को समझने, उसे रूप देने, उसके पूर्वोत्तर को एक समग्रबोध की श्रृंखला में रखकर देखने का आग्रह करती है।[22]
- यह सेक्स के दुरूपयोग और उसकी असामान्य स्थितियों के चित्रण का विरोध करती है।
- शिल्प के स्तर पर भी सहजता की मांग करती है।

lfØ; dgkuh vkj lonuk

सातवें दशक के अन्त तक हिन्दी कहानी नये रूपों व रंगों में अपने को ढालती रही और चुप्पी की संस्कृति के लिए व्यक्तिवादिरूझान रूमानी भाव धारा बदलाव बनकर आए और समकालीन यथार्थ की गहरी पहचान कराने वाली कहानी पाठकों के अनुभव को समृद्ध करके उनमें हिस्सेदारी व समझदारी का मादा पैदा करने का प्रयास करने लगी। पश्चिम के सांस्कृतिक दबाव के कारण धुंधली पड़ती भारतीयता की पहचान के बदले सक्रिय कहानी ने संघर्षशील आदमी आदमियत को समझा।

मंच 1978 के अंक में सक्रिय कहानी की अवधारणा को राकेश वत्स ने स्पष्ट किया–

- सक्रिय कहानी का सीधा और स्पष्ट मतलब है आदमी की चेतनात्मक उर्जा और जीवन्नतता की कहानी।
- उस समझ, एहसास और बोध की कहानी जो आदमी को बेबसी, वैचारिक निहत्थेपन और नपुसंकता से निजात दिलाकर, पहले अपने अन्दर की कमजोरियों के खिलाफ खड़ा होने के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी अपने सिर पर लेती है।
- यह कहानी साहित्य की सार्थकता के प्रति समर्पित है कि साहित्य संकल्प और प्रयत्न के बीच दरार को पाटने का एक जरिया है।
- यह कहानी व्यवहार और विचार के बीच का पुल है। यह जनता को सचेत व सक्रिय करती है।[23]
- सक्रिय कहानी में जीवन के क्रांतिकारी रूपान्तरण के साथ आदमी की बुनियादी इच्छाओं के संसार को जीवन्त और पुख्ता बनाने का प्रयत्न है।
- इसमें भारतीय सामाजिक व्यवस्था के गहरे व तीव्र अन्तर्विरोधों की पड़ताल है।
- व्यवस्था के अन्तर्विरोधों से जुझने के साथ स्वयं को अन्तर्विरोधों से लड़ना भी जरूरी है।
- इसमें अत्याचारी व्यवस्था से पहचान का अहसास, व्यवस्था से टकराने और उसे तोडने का दृढ़ संकल्प है।

tuoknh dgkuh vkj lonuk

सातवें दशक के अन्तिम वर्षों में हिन्दी की जनवादी कहानियाँ सामने आई। जनवादी कहानीकारों ने कहानी को सीधे जनसंघर्ष से जोड़ने का प्रयत्न किया। डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार जनवादी कहानी का प्रस्थान बिन्दु – जन सामान्य के अनुभवों, इन्सानी रिश्तों और अन्तर्विरोधों को बारीकी से देखना परखना हैं।[24] जनवादी कहानी ने यथार्थ को स्वीकारा यह वामंपथी विचारधारा से सम्पन्न है। इसे प्रगतिवाद का नया संस्करण माना जाता है। जनवरी कहानी ने वर्ग संघर्ष की चेतना को निरूपित किया। टूटे थके, हारे पात्रों के स्थान पर संघर्षशील जीवन्त, जुझारू पात्रों की सर्जना की। प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाया।

शोषण के विरूद्ध लड़ाई – रमेश उपाध्याय की देवी सिंह कौन?, ढोंगी धर्म गुरूओं की तस्वीर, पानी की लकीर, नमिता सिंह की समाधान, शोषक तत्व की क्रूरता, श्री हर्ष की भीतर का भय, जनचेतना को स्वर– नीरज सिंह की करिश्मा, बुर्जुआ नेताओं के हथकण्डे मधुकर सिंह की लहू पुकारे आदमी, निम्न वर्ग का संघर्ष, सुरेश काटक की एक बनिहार का आत्म निवेदन, विजेन्द्र अनिल की विस्फोट, काशीनाथ सिंह की अधूरा आदमी, लाल किले के बगल में मार्क्सवाद पर व्यंग्य, जनवादी चिन्ता सुरेश सेठ की जीना मरना, जितेन्द्र भाटिया की शहादतनामा, सतीश जमाली की अर्थतंत्र, सुभाष पन्त की तपती हुई जमीन, प्रभू जोशी की फोकस के बाहर, गुरूवचन सिंह की लावा, हरदेश की गुजंलक, मधुकर सिंह की हरिजन सेवक, हेतु भारद्वाज की अब यही होगा, स्वयं प्रकाश की सूरज कब निकलेगा से मिलता है। हिन्दी कहानी में जनवादी आन्दोलन ने अधिक सक्रिय और विश्वसनीय अपनाया।

lanHkZ xzUFk lwph

1. हिन्दी कहानी– सौ वर्ष का सफरनामा – राजेन्द्र सक्सेना, मधुमती, नव. दिस. 87, पृ. 135–138
2. हिन्दी कहानी के आन्दोलनों का आंकलन – रजनीश कुमार मधुमती, नव. दिस. 1987, पृ. 140
3. स्वातंत्रोत्तर प्रतिनिधि रचनाकार – डॉ. भेसललाल वही, पृ. 159
4. हिन्दी कहानी– विविध आन्दोलन – रजनीश कुमार, पृ 141
5. हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा – सं. रामदरश मिश्र, नरेन्द्र मोहन, पृ. 281
6. सारिका 16–29 फरवरी, 1984, पृ. 10
7. हिन्दी कहानी के विविध आन्दोलन डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति, पृ. 29
8. डॉ. नामवर सिंह – कहानी, नयी कहानी, पृ. 54
9. कहानी स्वरूप और संवेदना – डॉ. राजेन्द्र यादव, पृ. 37
10. आधुनिकता – टूटती हुई भारतीय संस्कृति – डॉ. धनंजय वर्मा, बिन्दु अक्टू–दिस. 1969, पृ. 860
11. डॉ. भगवानदास वर्मा – कहानी की संवेदनशीलता सिद्धान्त और प्रयोग, पृ. 195
12. डॉ. रामदरश मिश्र – आज का हिन्दी साहित्य पृ. 154
13. डॉ. गंगाप्रसाद विमल – समकालीन कहानी का रचना विधान, पृ. 17
14. डॉ. गंगाप्रसाद विमल – समकालीन कहानी का रचना विधान, पृ. 65
15. डॉ. चन्द्रभान रावत – हिन्दी कहानी फिलहाल, पृ. 34
16. हिन्दी कहानी के विविध आन्दोलन, पृ. 56–57
17. आधार – सचेतन कहानी विशेषांक, पृ. 15
18. डॉ. महीप सिंह – सचेतन कहानी रचना और विचार, पृ. 12
19. डॉ. गोरधन सिंह शेखावत – नयी कहानी उपलब्धि और सीमाएं, पृ. 86
20. डॉ. विनय समकालीन कहानी, पृ. 86
21. अमृतराय – आधुनिक भाव बोध की संज्ञा, पृ. 93
22. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ – हिन्दी कहानी के सौ वर्ष, पृ. 61
23. मंच 1978, पृ. 20
24. डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ – हिन्दी कहानी के सौ वर्ष, पृ. 68

♦❒♦